RNI पंजीयन क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./261/भोपाल/2009-11

एक सुनी-सुनाई कहानी

यह कहानी है एक नन्हे ऊँट और उसकी माँ की...

बच्चा : माँ, एक सवाल पूछूँ?

माँ : लगता है कोई चीज़ तुम्हें परेशान कर रही है।

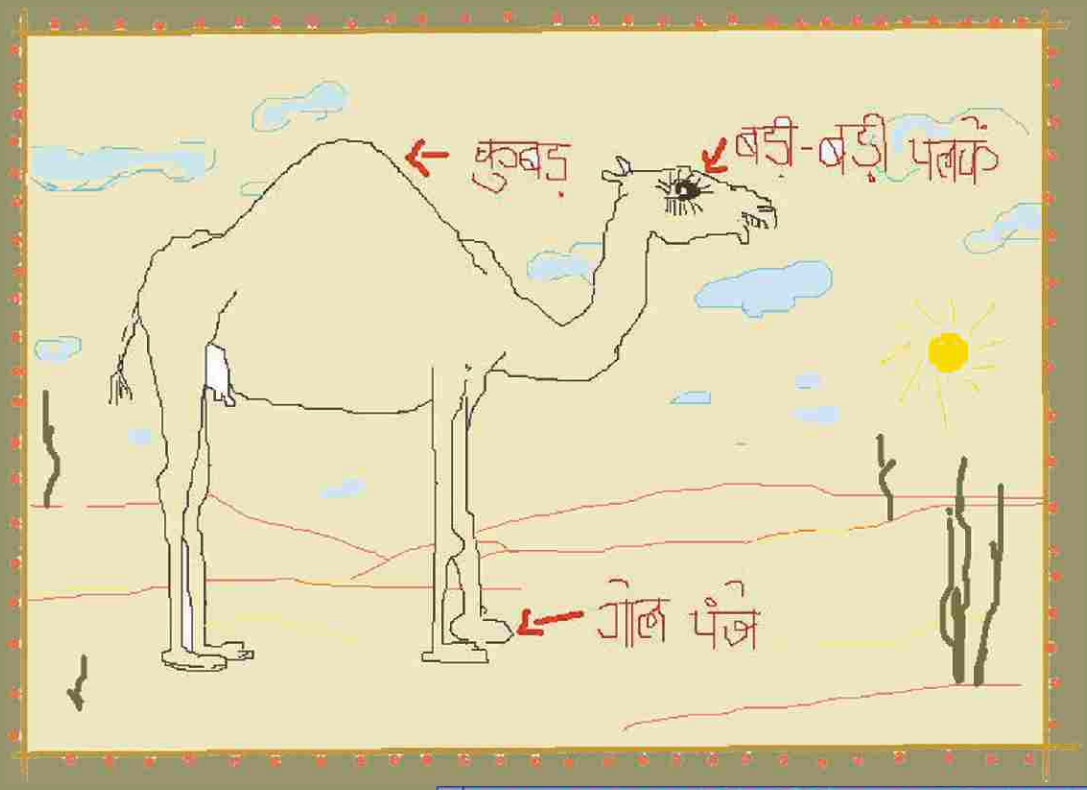

बच्चा : माँ, हम ऊँटों को कूबड़ क्यों होती है?

माँ : हम ठहरे रेगिस्तान के बाशिंदे! इसी कूबड़ में तो हम पानी इकट्ठा करके रखते हैं। और हम तो मशहूर ही इसलिए हैं कि बिना पानी के कई दिनों काम चला लेते हैं।

बच्चा : और, हमारे ये पँजे गोल, गद्देदार क्यों हैं?

माँ : ताकि हम रेगिस्तान में आसानी से चल सकें।

बच्चा : एक और सवाल पूछ लूँ? हमारी आँखों पर ये इतनी बड़ी-बड़ी झालरदार पलकें क्यों हैं? कुछ देखो तो बीच में आ जाती हैं। उफ!

माँ : ये पलकें न होतीं तो रेगिस्तान की धूल, रेत और हवा से हमारी आँखों का क्या हाल हो गया होता! ये पलकें हैं तो हमारी आँखें महफूज़ हैं।

बच्चा : समझा, हमारे कूबड़ है कि हमें पानी इकट्ठा रखना है। लम्बे पैर और गोल-गद्देदार खुर हैं कि हमें रेत में चलना है। यह भी समझ गया कि बड़ी-बड़ी पलकें हमारी आँखों को रेत-धूल-तेज़ हवाओं से बचाती हैं। पर,...

पर माँ, फिर हम इस पिंजरे में क्या कर रहे हैं?

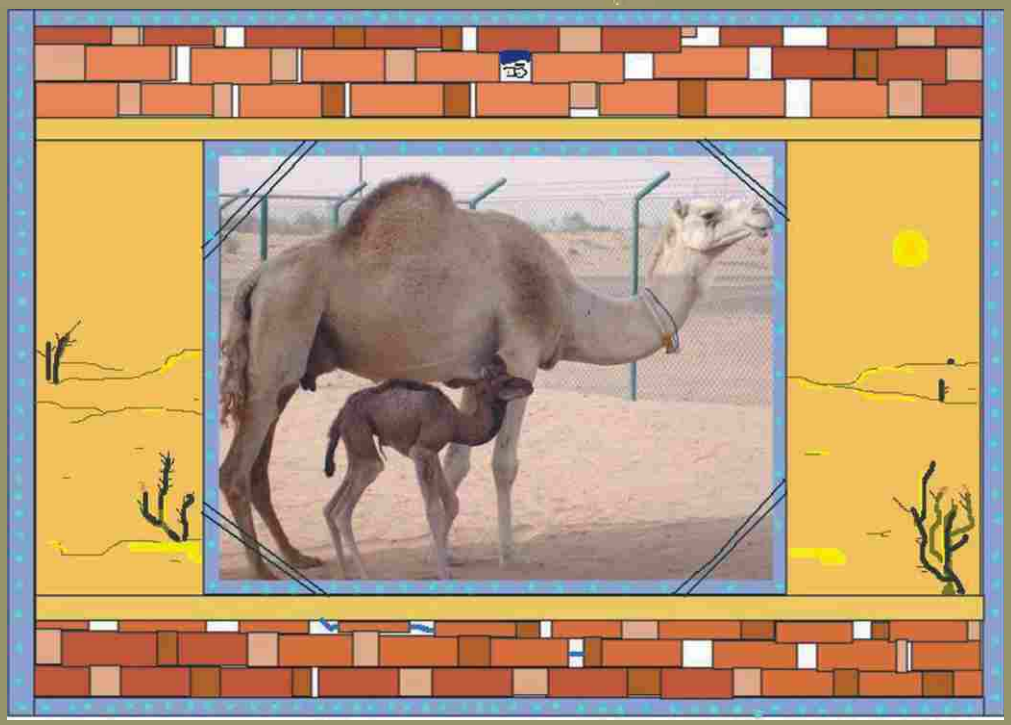

चित्रः वास्वी ओझा

प्रकाशक एवं मुद्रक सी. एन. सुब्रह्मण्यम द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोनः 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादकः सुशील शुक्ल